अध्याय – 5

उपसंहार

"स्वातंत्र्योंत्तर काल में उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत गायकों का भक्ति संगीत में योगदान – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" इस विषयान्तर्गत; अथाह सागर समान एवं बहुआयामी भारतीय संगीत का, विश्वकल्याणकारी 'सनातन धर्म' एवं गरिमामयी 'भारतीय संस्कृति' के संदर्भ में, तथा भारतीय तत्वज्ञानानुसार, मोक्षप्राप्ती के कई उपलब्ध मार्गों में से 'अध्यात्म मार्ग' एवं 'भक्ति मार्ग' के विषय में शोधार्थी द्वारा गहन अभ्यास करनेका यत्न किया गया | शोधार्थी द्वारा चयनित विषय के संदर्भ में अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु, शास्त्रीय गायन के साथ साथ 'भक्ति संगीत' में अभूतपूर्व योगदान देनेवाले श्रेष्ठ कलाकारों के शिष्यों से बातचीत करके तथा TV, YouTube एवं अन्य सोशयल मीडिया में उपलब्ध साक्षात्कार तथा पुस्तकें आदि माध्यमों से; विषय के अनुलक्ष में जानकारी संग्रहीत करनेका प्रयास किया गया है | इस प्रकार से, विषयलक्ष्यी अध्ययन करके प्राप्त हुई जानकारी एवं निष्कर्षों को उजागर करनेका प्रामाणिक प्रयास शोधार्थी ने किया है |

भारतीय अभिजात संगीत की, **वैदिक समूह गान** (सामगान) से लेकर आज के **'ख्याल गायन'** तक की यात्रा में; कालानुरूप एवं परिस्थिति के अनुलक्ष में कई **परिवर्तन** हुए है |

भारतीय धर्म एवं संस्कृति में अंतर्भूत 'भक्ति' एवं जनसमूह के उद्धार हेतु अत्यंत **सुगम 'भक्ति मार्ग'** में **'संगीत'** का किया हुआ संमिश्रण; दु:ख निवृत्ति करके 'आत्मानुभूति' का अलौकिक अनुभव प्रदान कर सकता है |

शोधार्थी द्वारा चुने हुए सभी कलाकारों में 'भक्ति' के संस्कार देखे गए है |

जैसे – पंडित भीमसेन जोशी के ऊपर, कर्नाटक की भक्ति परंपरा से, माता द्वारा, गुरु सवाई गंधर्व एवं कौटुंबिक आध्यात्मिक गुरु राघवेंद्र स्वामीजी के माध्यम से बाल्यकाल से ही भक्ति के संस्कार; पंडित कुमार गंधर्व जी के क्षय रोग से अस्वस्थ होने पर, निर्गुणी कनफटे साधुओं का तथा निर्गुणी भक्ति का प्रभाव; पंडित जितेंद्र अभिषेकी जी का 'मंगेशी' मंदिर के सनिध्य में निवास, कीर्तनकार पिता के साथ मंजीरे बजानेकी संगत आदि के कारण शैशव काल से 'भक्ति' के संस्कार; पंडित जसराज जी का 'भक्तिरस' प्रधान 'मेवाती' घराना तथा आध्यात्मिक गुरु 'साणंद बापू' , 'स्वामी वल्लभदास' एवं पुष्टिमार्गीय गुरु 'श्याम मनोहर गोस्वामी' जी का पंडित जी के उपर प्रभाव; गानसरस्वती किशोरी आमोणकर जी 'ईश्वर' के लिए असीम आस्थावान, कुलदेव 'रवलनाथ' तथा आध्यात्मिक गुरु 'राघवेंद्र स्वामी' जी के प्रति सदैव 'भक्ति' एवं 'शरणागती' का भाव; डॉ वीणा सहस्रबुद्धे जी आस्तिक एवं श्रद्धालु होकर, कुमारजी के प्रभाव के कारण, उनपर 'निर्गुण भक्ति' के संस्कार तथा पंडित राजन-साजन मिश्र जी के काशी में जन्म एवं निवास(शैशव काल) के कारण, काशी क्षेत्र के तथा घर के परंपरागत श्रद्धा एवं भक्ति के संस्कार दिखाई पड़ते है |

उपरोक्त सभी महान कलाकारों को **'सुरों' के प्रति अपार श्रद्धा होकर 'सुरों' को ही वे 'ईश्वर' मानते थे** | अतः श्रद्धा एवं भक्ति से ओतप्रोत होने से, सभी कलाकारों की प्रत्येक सांगीतिक प्रस्तुति **'भाव पूर्ण'** होती थी | अपितु शास्त्रीय संगीत की महफ़िल में आनेवाले अधिकतर श्रोता संगीत के शास्त्र के प्रति अनभिज्ञ होने से; 'आत्मरंजन' हेतु गाया जानेवाला शास्त्रीय संगीत, उन श्रोताओं को क्लिष्ट प्रतीत होता था | किन्तु शास्त्रीय संगीत गायक कलाकार, 'श्रद्धा एवं भक्ति' से ओतप्रोत होने से तथा 'भक्ति संगीत' या 'भजन' की नीव 'श्रद्धा एवं भक्ति' होने से, शास्त्रीय संगीत गायक कलाकारों ने अपनी महफ़िल में भक्ति संगीत को स्थान दिया | अतः शास्त्रीय संगीत की महफ़िल में 'राग' संगीत के पश्चात, एक या दो भक्ति गीतों को सुनने की लालसा से आम जनता की उपस्थिति नजर आयी और

वर्षों तक 'सुरों' की साधना किये हुए शास्त्रीय गायक कलाकारों द्वारा, शास्त्रीय संगीत की महफ़िल में, 'भजन' के प्रस्तुतिकरण से, भारतीय ईश्वरप्रेमी आम जनता भाव विभोर होने लगी |

सभी श्रेष्ठ कलाकार, 'राग' संगीत के माध्यम से, कई बार एक ही रचना को, भिन्न भिन्न रागों में इस प्रकार से स्वरबद्ध करते थे कि, उसका गूढ़ार्थ कायम रहते हुए केवल सांगीतिक प्रस्तुति अलग रहती थी | अर्थात **सगुण ईश्वर की 'लीला' एवं निर्गुण निराकार जैसी अत्यंत 'तरल' भावना** को जनमानस तक पहुँचाने के लिए **सुयोग्य रागों का चयन** करके, उनके प्रति **'शरणागत'** भाव रखकर अभिव्यक्ति करते थे | अतः **शास्त्रीय संगीत के अंग** से अथवा किसी रागाधारित **शब्दप्रधान 'भक्ति संगीत' या 'भजन' के प्रस्तुतिकरण** के माध्यम से, **शास्त्रीय संगीत का प्रसार प्रचार होकर; उसकी क्लिष्टता** 'भावपूर्ण' शब्दों मे बदल गई | इस प्रकार, शास्त्रीय संगीताधारित 'भक्ति संगीत' सुनाकर श्रोताओं के मन में, **शास्त्रीय संगीत** के प्रति **'रुचि'** उत्पन्न कराने का अद्भुत कार्य; इन सभी महान कलाकारोने किया |

इसी के साथ, भारतीय धर्म रक्षक **संतों** पर तथा उनके **उपदेशात्मक साहित्य** पर अपार प्रेम करने वाले इन कलाकारोंने अपने **संगीत के माध्यम** से; संतों के **लोकोद्धार** के कार्य को आगे बढ़ाया | उपरोक्त सभी **कलाकार** संत साहित्य के **प्रगाढ़ अभ्यासक** होकर, संतों की प्रत्येक रचना की पंक्तियों को, अभिजात स्वरों की माला में गूँथे हुए शब्दों के उचित उच्चारण द्वारा, **पुनः पुनः गाकर,** रचना के **'भावार्थ'** को जनता के हृदय में उतार देते थे | जिसके लिए भीमसेन जी की "संतवाणी", कुमार जी के "निर्गुणी भजन", जसराज जी का "हवेली संगीत", किशोरी ताई का "मगन भई मीरा" तथा "तोची नादु सुस्वरू"(मराठी अभंग), वीणाताई के "निर्गुणी कबीर भजन", अभिषेकी जी के "मराठी अभंग" तथा राजन साजन जी के "हिन्दी भजन" आदि कार्यक्रम प्रमुख रहे है; जिनके अंतर्गत भक्तिपूर्ण संत रचनाओं का गायन करके, उपरोक्त सभी श्रेष्ठ कलाकार सामान्य जनता के हृदय तक पहुँच सके |

अन्य एक नजारिये से विचार किया जाय तो, शास्त्रीय संगीत की महफ़िल में, एक या दो राग प्रस्तुत करनेके पश्चात; 'ठुमरी', 'टप्पा' जैसी उपशास्त्रीय विधा प्रस्तुत करनेका चलन देखा गया है | परंतु एक समयकाल दरमियान, 'ठुमरी' में रहनेवाले 'उत्तान श्रृंगारिक' शब्द एवं 'तत्सम' अर्थ के कारण; सभी कलाकारों के लिए उसे गाना एवं समाज ने सुनना स्वीकार्य नहीं था | अतः कुछ कलाकारों ने, 'सात्विक' शब्द एवं भाव रहनेवाले भजनों को, शास्त्रीय संगीत के अंग से प्रस्तुत करनेका प्रारंभ किया | इस प्रकार से, इन श्रेष्ठ कलाकारों ने, महफ़िल में, ठुमरी, टप्पा जैसे उपशास्त्रीय प्रकारों को गाने के चलन में परिवर्तन करके 'भजन' या 'भक्तिगीत' प्रस्तुत करके; समाज के श्रोताओं के लिए नवीनतम प्रयोग किया |

अतः शोधार्थी के मतानुसार, शास्त्रीय संगीत गायकों द्वारा, शास्त्रीय संगीत की महफ़िल में 'भक्ति संगीत' प्रस्तुत करनेवाले कलाकारों द्वारा उपलब्ध माहिती एवं अध्ययन के आधार पर निकले हुए निष्कर्ष संक्षेप में इस प्रकार से है ---

1. **'भक्ति संगीत' सुनने के मोह से, आम जनता शास्त्रीय संगीत की महफ़िल में पधारने लगी |**

2. **शास्त्रीय संगीत के प्रति रहनेवाली 'मूलभूत आस्था' के साथ समझौता किये बिना, 'भक्ति संगीत' की रागाधारित प्रस्तुति के माध्यम से, कलाकारों ने शास्त्रीय संगीत का प्रचार प्रसार करके उसके प्रति आम जनता के मन में 'आस्था' निर्माण की |**

3. **सभी कलाकारोंने भक्ति संगीत को अपनाकर, लोगों के हृदय पटल पर अपनी 'छवि' को स्थायी बनाया | अर्थात भक्ति संगीत के प्रस्तुतिकरण से ही सभी कलाकारों को जन सामान्य पहचानने लगे तथा उन्हे और अधिक "लोकप्रियता" मिली |**

4. **कलाकारों की 'लोकप्रियता' के कारण एवं 'भक्ति संगीत' के माध्यम से शास्त्रीय संगीत के प्रति निर्माण हुई जिज्ञासा पूर्ति के उद्देश्य से उसे सीखने की प्रवृत्ति के कारण, इन सभी लोकप्रिय कलाकारों का शिष्य समुदाय दिन प्रतिदिन परिवर्धित होने लगा |**

5. **शास्त्रीय संगीत साधकों द्वारा गायी हुई भक्ति रचनाओं की अपार लोकप्रियता के कारण तथा उसे पुनः पुनः सुनने के उद्देश्य से; उन रचनाओं की कॅसेट्स, सिडीज या एल्बम का निर्माण हुआ |**

6. **क्लिष्ट लगनेवाले राग संगीत को धैर्य पूर्वक सुनकर, पश्चात प्रस्तुत होनेवाले 'भक्ति संगीत के माध्यम से; सामान्य जनता को 'आनंद' एवं 'शांति' की अनुभूति प्राप्त हुई|**

7. **लोकोद्धारक संत रचनाओं के माध्यम से सभी स्तरों के एवं उम्र के लोगों पर, निजी स्वभावानुसार 'सगुण' या 'निर्गुण' भक्ति एवं 'सात्विकता' के संस्कार अंकित होने लगे|**

8. **महफ़िल में उपस्थित युवा पीढ़ी का, भारतीय 'प्रादेशिक' भाषाओं में रचित 'संत साहित्य' एवं उसके माध्यम से 'भारतीय समाज एवं संस्कृति' का; कुछ अल्प मात्रा में परिचय होने लगा|**

9. **महफ़िल में प्रस्तुत संगीत से, अनुभूत 'आनंद एवं शांति' से, संगीत के अन्य (पश्चिमात्य) प्रकारों की तुलना में 'भारतीय संगीत' की 'श्रेष्ठता' सिद्ध होने लगी |**

10. **आत्मानुभूति के लिए उत्सुक एवं संगीत प्रेमी साधकों के लिए 'नाद-ब्रह्म' की साधना के मार्ग में विश्वास निर्माण होकर, साधना सुकर बन गई |**

इस प्रकार से, शोधार्थी ने, "स्वातंत्र्योत्तर काल में उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत गायकों का भक्तिसंगीत में योगदान – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" इस विषयान्तर्गत अध्ययन से प्राप्त हुए तथ्यों एवं निष्कर्षों को उजागर करनेका प्रयास किया है |